ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 8 | MAY - 2017

REVIEW OF RESEARCH

"मानव अधिकर-दलित साहित्य के संदर्भ में"

डॉ. नीता भोसले

सह प्राध्यापक, सरकारी प्रथम श्रेणि महाविद्यालय, कमलापूर.

मनुश्नुय एक समाजिक प्राणी है । समाज में रहकर वह अपेने व्यक्तित्व का विकास करना चाहता है । वह तभी संभव हो जाता है जब उसके अन्तर्निहित शक्तियों को प्रस्फूटीत करने के लिए उसे सुनिश्चित अवसर प्राप्त हो। उसे पाकर वह अपने व्यक्तित्व का विकास करता है, जिसमें उसके अपने जीवन मूल्य निहित होते हैं, जिन्हें पाने के लिए उसे अनेक संघर्ष करने पडते हैं । अपने अधिकारों केप्रति सजग होना पडता है। जिसे हम मानव अधिकार कहते हैं । मानव अधिकार का तात्पर्य उन मौलिक अधिकारों से जो मनुष्य जन्म से उसके अधिकारी है ।

मानव अधिकार वह है जो व्यक्ति में लिंग भेद, भाषा भेद और धर्म भेद होते हुए भी सभी को समान है । मानव अपने इस अधिकर के लिए संघर्ष करते हुए दिखाई देता है । शिक्षा एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने अधिकारों के प्रति लड़ सकत है । इसी लिए डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर जी ने शिक्षा संघटन और संघर्ष इन तीनों द्वारा मानव अधिश्कार के महत्व को बताये हैं ।

सिक्षा का अधिकार सुरक्षा का अधिकार है, जिसमें आर्थिक संरक्षण निहित है। शिक्षा के व्दारा वैचारिक और संवीदानात्मक सोच और चिंतन में परिवर्तन आ जाता है। जो जीवन के तथ्यों को भी बदलकर रख देते हैं। इसी संदर्भ में "आमने-सामने के श्रीमुख मिश्र कहते हैं- "पहले ये करो अपने बाल-बच्चों को पढ़ने भेजो, बच्चे किसी भी व्यक्ति और समाज के लिए एक कच्छा माल है, और उन्हीं पर समाज की प्रगति सोच को गतिशीलता टिकी हुई होती है, तो पध्आओ अपने बेटी-बेतों को।" पितृसत्ता के चलते भारतीय परिवार में बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं । आज की युग में यह ज्वलंत समस्या हमारे सामने

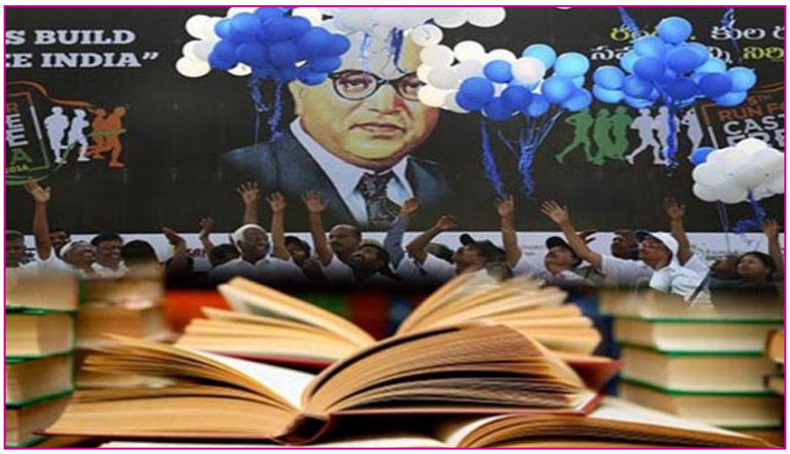

उभरकरल् आयी है। आज शिक्षा व्दारा समाज में परिवर्तन आ जाता है । शिक्षा के व्दारा वैचारिक और संवेदनात्मक सोच और चिंतन में परिवर्तन आ जाता है। जो जीवन के तत्ल्यों को ही बदल कर रख देता है। परिणामस्वरूप समाज सपेक्ष जो मान्यताएँ हैं उसे धडल्ले से उखाड फेंकने के हिम्मत्ल आती है। "आमने-सामने" का चंदु पांडे को धमकाते हुए श्रीमुख मिश्रा कहते हैं - "कुछ भी बातें हो पण्डे जी, लेकिन अब इस गाँव में, इस स्कूल में किसी के साथ भेद-भाव बरतना नहीं जाएगा। सभी को समान अधिकार प्राप्त है। आप कौन है, संस्कार चलानेवाले, छुआ-छूत के पेड को पसारनेवले आप नहीं मानेंगे तो इसकी रिपोर्ट होगी और इसमें शयद आप की मास्टरी भी जा सकती है। स्कूल एक सार्वजनिक चीज है, आप भी है यहाँ और आपके व्दार किया गया ये खैय्या कायेदा- कानून के दयरे में आ जाएगा।" समाज के बदलते हुए यह सामाजिक मूल्य मानव में अपने अधिकारों के प्रति जागरुकता भर देते है परिणाम स्वरूप बदलाव के कारण बदलाव की उत्प्रेक्षक शक्ति तेजी से बड़ जाती है, जो साहित्य में सामाजिक परिवर्तन लाने में प्रेरक बन जाते हैं। यह हमें प्रत्येक्ष या कभी अप्रत्येक्ष के रूप में दिखाई देते हैं। साहित्य संवेदनशीलता और समाजशास्त्रीय समीक्षा का सृजनात्मक समागम हमें डॉ. सुशील टाकभौरे के कहानी सिलीया के माध्यम से अभिव्यक्त होते हुए दिखाई देती है - "उसकी आँखों में एक चमक थी हीनता और दीनत का भाव तो न जाने कब के जा चुके थे ?" वह मन ही मन सोच रही थी "झाड नहीं कलम" हाँ कलम ही उसके समाज का भाग्य बदलेगी। उसने सोचा वह खूब पडेगी। सम्मान के उच्छ शिखर पर पहुँचेगी, वह एक चिंगारी है, जो मशाल बनकर अपने समाज की प्रगती के मार्ग को प्रकासित करेगी।

मानव जाती का इतिहास संघर्ष का इतिहसहै। मानव अपने अधिकारों के प्रति संघर्ष करता चला आ रहा है। यह संघर्ष उसका अपना वैयक्तिक होते हुए भी समाज सापेक्ष है। सामाजिक असमानता इसका मूल कारण है, जहँ संघर्ष है वहाँ अधिकार की माँग की जाती है, यह अधिकार प्रकृति प्रदत्त है, जो सामाजिक समानता लाने के लिए बाध्य करते हैं। यह संघर्ष संघठित होकर किया जाता है, जो विद्रोहात्मक है, इस विद्रोह की अभिव्यक्ति हमें लेखक - "आराम निहोर विमल' की कहानी अब नहीं नाचब के माध्यम से व्यक्त चामारों के प्रधान सरपंच ने खडे होकरल् सबको संबोधित किया - "पंचगण सुनो पंचायत का मानना है कि शेर सिंह का गेंहू, चावल लेकर, कन्हई भगत के घर खुद पहुँचा जाना-हम पंचों की जीत है। इसी के लिए हमारी लड़ाई शुरु हुई थी... सभीपंचगण इस बात का संकल्प करले कि हमें उगी, झूठ और जाल साजी के हाथ की कठपुतली बनकर, उसकी लुट-खसोट का शिकार नहीं होना है। संकल्प ले कि, हमें इस गेंहू वाली लडाई की तरह एक जूट होकर समान अधिकार और न्याय के साथ जीना है।" अपने अधिकारों के प्रति सजगता की लड़ाई लडना है।

मानव अधिकार से जुडे हुवे सवल हमें यह सोचने के लिए विवश करते हैं कि हम अपने अधिकारों के नैतिक मूल्यों, के लिए सजग उठे। व्यक्ति अथवा समूह के इन्हीं माँगों को समाज व्दारा मान्यता प्राप्त होती है। जिस से मानव जाति की उन्नती होती है । ऐसे माँगों को कभी

अधिकर की मान्यता नहीं प्राप्त हो सकती जो व्यक्ति के विकास में बाधक हो। नैतिक तथा सदाचार के आधर पर ही कोई माँग अधिकार का रूप ग्रहण कर सकती है। समाज व्दारा नैतिक पतन को स्वीकारते हुवे, अपने नैतिक आचरण के व्दारा सामाजिक परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाता है। अस्मिता लहु लूहान का चन्दर कहता है ! बहन तुम ने मुझे वह ज्ञान दिया, जिसकी आज तक मैंने कल्पना नहीं की थी। मुझे विदा दो तुम्हें मैं उस नरक से निकालूँगा तुम कुच छोटा सा रोजगार करो, तुम्हारी जैसी ज्ञानवन स्त्री मैंने आज तक नहीं देखी" मानव अधिकाअ में उसके कर्तव्य भी जुटे होते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी अधिकार को प्राप्त कर लेता है तो उसका आद्य कर्तव्य होता है कि वह अपनों के प्रति अपने, कर्तव्य को भी समझे, उन्हें मदत करें, यही कर्तव्य पारायणता हमें - "जीने का अधिकार माध्यम से अबिव्यक्त होते हुए हमें दिखाई देता है-घ्सुबोका तुम नीच जाती के कहे जानेवक्ले लोग गाँव में इतनी अधिक हो और उँच जाती का ढोंगा रचनेवाले मुट्ठी भर, फर्क इतना है कि तुम डरपोक हो। असंघटित हो, अशिक्षित हो, इसलिए अपने अंदर से इन बुराईयों को निकालो... तुम भी उन्हीं की तरह इंसान हो पशु नहीं इसलिए तुम्हें भी इन्हीं की तरह जीने का हक है। अपने आप को पहचानो अपनी ताकतों को जानो।"

इसीलिए शिक्षा का अधिकार, सुरक्षा का अधिकार है, किन्तु इन अधिकारों के प्रति सजग न होने के कारण उसे अधिकारों के प्रति लडना पड़ता है। इसलिएअ 'आरक्षण का बिज्जू कहत है। पिताजी बाबा साहेब ने लिखा है - "शिक्षित बनो, जिसका मतलब है खूब पढ़ाई-लिखाई करो, संघटित बनो, अर्थात मजदूरों को इकट्ठा हो जाना चाहिए। संघर्श करो और सब मिलकर अपने अधिकार के लिए माँग करनी चाहिए। यह संघर्ष उसका अपना वैयक्तिक न होते हुए समाज सापेक्ष है। मानव अधिकार के प्रतीक जागृति लाने के लिए साहित्य एक सशक्त माध्यम है, क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण है, समाज में जो घटना है वही साहित्य में दिखाई देता है। साहित्य मानवीयता को परखने तथा उसमें प्रतिबध्द होकर अपने अधिकारों के प्रति सजग हो उठा है यही मानव अधिकार है। जिसे दलित लेखक ने अपने साहित्य दर्पण में उजागर करने का प्रयास किया है।

इन्हीं मन्यताओं को दलित लेखकोंने अपने साहित्य के व्दारा जागृति लाने का प्रयास कियाहै । अपनी अस्मीत की नारी जमीन तलाशने का प्रयास किया है, यही उनका वजूद है । यही मानव अधिकार है।

साहित्य मानवियता को परखने का सशक्त माध्यम है, एक और पारंपरिक सोच तत्कालीन समाज तथा उसके प्रति साहित्य की प्रतिबद्धता तथा उससे जुडे प्रतिबंध को समझने तथा नये सोच लाने का प्रयास करताहै, यही मानव अधिकार है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. समकालीन दलित कहाँनिया, लेखक-डॉ. कुसुम वियोगी
२. नयी सदी की पहचन श्रेष्थ दलित कहानियँ - सं. मुद्रा राक्षस

३. मानव अधिकार और भारतीय संविधान-संरक्षण एवं विश्लेषण, प्रदीप त्रिपाठी
४. साहित्य वैभव-प्रथम पी.यू.सी. पठ्यपुस्तक.